

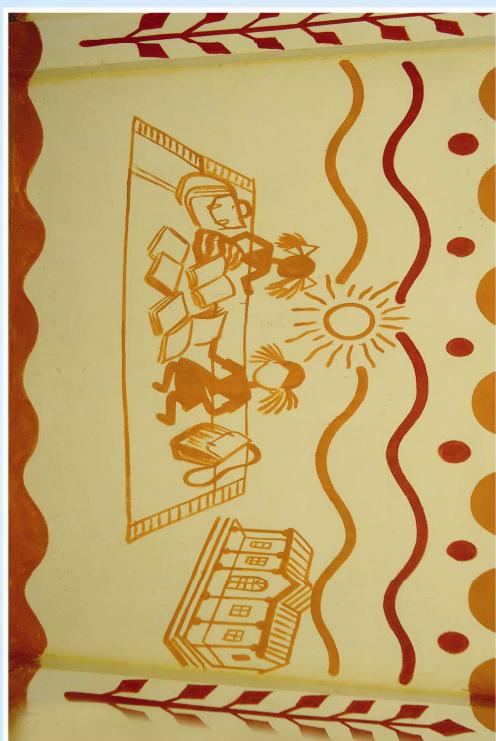
राष्ट्रीय पाठ्यचर्चर्या 2005 की अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षक-शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक छात्राभ्यापक को इस प्रकार समर्थ बनाना है कि वह—

- बच्चों का ख्याल रख सके और उनके साथ रहना पसंद करें।
- सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सकें।
- व्यक्तिगत अनुभवों से अर्थात् निकालने को अधिगम अर्थात् सीखना समझे।
- सीखने के तरीके समझे, सीखने की अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करने के संभावित तरीके जाने तथा सीखने के प्रकार, गति तथा तरीकों के आधार पर विद्यार्थियों की निमिन्नताओं को समझें।
- ज्ञान को, विंतनशील सीखने की सतत उभरती प्रक्रिया मानें।
- ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के बाह्य ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निर्माण को देखें।
- उन सामाजिक, पेशेवर और प्रशासनिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील हो जिनमें उसे काम करना है।
- ग्रहणशील हों और लगातार सीखता रहें, समाज और विश्व को बेहतर बनाने की दिशा में अपनी जिम्मेदारियों को समझ सकें।
- वास्तविक परिस्थितियों में न केवल समझदारी वाले खेलों को अपनाने की ज्यपुक्त योग्यता का विकास करें बल्कि इस तरह की परिस्थितियों का निर्माण करने के भी योग्य बनें।
- उसके भाषायी ज्ञान और दक्षता का आधार ठोस हो।
- व्यक्तिगत अपेक्षाओं, आत्मज्ञान, क्षमताओं, अभिरुचियों आदि की पहचान कर सकें।
- अपना पेशेवर उम्मीदीकरण करने के लिए सोच समझ कर प्रयास करता रहें। यह विशेष परिस्थितियों अध्यापक के रूप में उसकी भूमिका तय करने में मदद करेंगी।

## डिप्लोमा इन एजुकेशन

(डी.एड.) प्रथम वर्ष हेतु

### विषय - भाषा शिक्षण



प्रकाशन वर्ष - 2010

नि.शुल्क वित्ताना हेतु

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर, छत्तीसगढ़